Semester II

Course III

Learning And Teaching

@. Motivation And Education

अभिप्रेरणा एवं शिक्षा

By

Dr. Asha Kumari Gupta

Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

Motivation And Education
अभिप्रेरणा एवं शिक्षण

अधिगम की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का अत्यधिक महत्व है। यह अधिगम का एक महत्वपूर्ण अंग है। अभिप्रेरणा सीखने की प्रक्रिया और परिणाम दोनों को प्रभावित करती है। अभिप्रेरित शिक्षार्थी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, उनके सीखने की गति तीव्र होती है, उनका सीखना भी अपेक्षाकृत अधिक स्थायी होता है।

- एन्डरसन के शब्दों में :- "सीखने की प्रक्रिया सर्वोत्तम रूप में आगे बढ़ेगी यदि वह अभिप्रेरित होगी।"
"Learning will proceed best, if motivated."

- स्किनर के अनुसार :- "अभिप्रेरणा, सीखने का राजमार्ग है।"
"Motivation is the super highway to learning."

अभिप्रेरणा अधिगम का एक महत्वपूर्ण अंग है। बालक को प्रशंसा एवं दोष, स्वीकृति एवं अस्वीकृति के मध्य अनेक कार्य करने पड़ते हैं। शिक्षा में अभिप्रेरणा का महत्व इस प्रकार है —

1. मान्यताओं का विकास (Development of Norms) — शिक्षा का उद्देश्य ऐसी मान्यताओं का विकास करना है जिससे बालक अच्छा नागरिक बन सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निश्चित पाठ्यक्रम बनाई जाती है। चरित्र एवं व्यक्तित्व के भावना विकसित की किया जा सकता है।

2. रुचि एवं अभियोग्यता का विकास (Development of Interest and Attitudes) :- अभिप्रेरणा से बालकों

Scanned with CamScanner

में किसी कार्य या ज्ञान के प्रति रुचि एवं अभिप्रेरणा का विकास होता है। यदि बालक में किसी कार्य को करने की अभिप्रेरणा नहीं होती तो वह क्रिया सीखी नहीं जा सकती। अतः उनके द्वारा उच्चतम मानसिक विकास सम्भव नहीं है।

3. मार्ग प्रदर्शन (Guidance) —: आज के छात्र विद्यालय के किसी भी कार्य में रुचि प्रदर्शित नहीं करते, इसलिए यह आवश्यक है कि उनकी विद्यालयी कार्यों में रुचि उत्पन्न की जाये। इसके लिए छात्रों को प्रेरणा के माध्यम से समुचित निर्देशन प्रदान कर, उनका पथ-प्रदर्शन किया जाय।

4. अधिगम (Learning) का आधार —: अभिप्रेरणा अधिगम का आधार है। यह व्यक्तित्व के कई पहलुओं से सम्बन्धित है। अतः शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह छात्रों को नकारात्मक प्रेरणा न करे, जैसे — कक्षा में अपमान, निन्दा करना दण्ड देना आदि; क्योंकि कभी-कभी नकारात्मक अभिप्रेरणा से बालक की हानि भी हो सकती है।

5. अधिगम की इच्छा (Will to learn) —: आत्म-अभिप्रेरणा से बालकों में किसी कार्य को करने की इच्छा बलवती हो जाती है। अध्यापक को चाहिए कि वह (i) छात्रों को समस्या की जानकारी करायें, (ii) श्रमनिष्ठा का महत्व बतायें, (iii) प्रगति के मूल्यांकन की विश्वसनीय तथा वैध विधि अपनाए (iv) छात्रों का आत्म-विश्वास जाग्रत रखें (v) प्रत्येक शिक्षण को ऐसा लगे कि इसी ने विशेष प्रगति की है।

6. आवश्यकताओं की पूर्ति (Fulfilment of Needs) :— अध्यापक को चाहिए कि वह छात्रों की शारीरिक, मानसिक, वैयक्तिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं का ध्यान रखकर शिक्षण आरम्भ करे। इस बात का ध्यान रखा जाये कि बालक जिस भी पाठ को पढ़े उसे वे अपने ऊपर थोपा हुआ न समझें।

7. प्रशंसा एवं निन्दा (Praise and Scold) — शिक्षण में

इन दोनों का ही महत्व होता है। अतः शिक्षक को प्रशंसा एवं निन्दा का प्रयोग, प्रेरणा के रूप में करना चाहिए। बालक के किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक कर लेने पर, शिक्षक को उसकी प्रशंसा करनी चाहिए और बार-बार असफल होने पर तत्काल ही उसकी निन्दा करनी चाहिए, तभी इनका प्रयोग प्रभावी हो सकता है।

Use of Effective Teaching Methods

8. उत्तम शिक्षण विधियों का प्रयोग :- अध्यापक उत्तम शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से छात्रों को अबाध गति से संगठन हेतु अभिप्रेरित कर सकता है।

निष्कर्ष रूप में, अभिप्रेरणा सीखने का एक सरल साधन है। इस साधन के द्वारा शिक्षक छात्रों को उनके लक्ष्य की प्राप्ति की ओर उन्मुख कर सकता है और उनके व्यवहार में वांछित परिवर्तन करने में सफल हो सकता है। इस प्रकार शिक्षण-अधिगम में अभिप्रेरणा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner